E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

राजस्थान में सतत पर्यटन विकास हेतु नीति और योजनाएं : एक बहु-घटक विश्लेषण

डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत [1], रश्मि गुप्ता [2]

[1] शोध निर्देशक, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, भोपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

[2] शोधार्थी, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, भोपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में स्थित राजस्थान राज्य अपनी सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यहाँ के भव्य किले, राजमहल, रंगीन त्योहार, लोक संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प और रेगिस्तानी परिदृश्य पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। राजस्थान की समृद्ध परंपराएँ और ऐतिहासिक धरोहरें इसे एक विशिष्ट पहचान देती हैं जिसके कारण यह न केवल भारत बल्कि विदेशी पर्यटकों के लिए भी एक लोकप्रिय गंतव्य बन गया है। "पर्यटन ने न केवल राज्य की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया है बल्कि इसने राज्य के आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।"[1]

नई पर्यटन नीतियों के माध्यम से पर्यटकों की संख्या बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है साथ ही सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और सतत विकास को भी सुनिश्चित किया जा रहा है। राजस्थान के प्रमुख जिले जैसे- गुलाबी नगरी जयपुर, झीलों की नगरी उदयपुर, स्वर्ण नगरी जैसलमेर, नीला शहर जोधपुर, पुष्कर, अजमेर, बीकानेर, माउंट आबू आदि पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं। "जयपुर, उदयपुर, जोधपुर और जैसलमेर जैसे शहरों में स्थित महल और किले पर्यटकों को आकर्षित करने का मुख्य कारण बनते हैं।"[2] इसके अलावा राजस्थान में कई यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल जैसे- आमेर किला, चित्तौड़गढ़ किला, जैसलमेर किला और जंतर-मंतर यहाँ की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दर्शाते हैं।

राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1956 में पर्यटन विभाग की स्थापना की गई। इसके अंतर्गत चार प्रमुख संस्थाएं राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (RTDC), राजस्थान राज्य होटल निगम लिमिटेड, राज्य स्तरीय मेला प्राधिकरण और रीटमैन (Rajasthan Institute of Tourism and Travel Management) कार्यरत हैं। 1989 में राजस्थान ने सर्वप्रथम पर्यटन को उद्योग का दर्जा देकर भारत में एक नई मिसाल कायम की। राजस्थान पर्यटन की टैगलाइन 'भारत का अतुल्य राज्य' (The Incredible State of India) और स्लोगन 'पधारो म्हारे देस' है जो इसकी समृद्ध विरासत और आतिथ्य सत्कार को दर्शाते हैं।

"राज्य के पर्यटन क्षेत्र में भारी निवेश ने न केवल राजस्व बढ़ाया है बल्कि इसके माध्यम से अन्य कई संबंधित क्षेत्रों को भी लाभ हुआ है। होटल व्यवसाय, परिवहन, खाद्य उद्योग, हस्तशिल्प, खुदरा व्यापार, और कृषि जैसी अनेक सेवाओं को पर्यटन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से फायदा हुआ है। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, पर्यटन क्षेत्र ने राज्य के जीडीपी में लगभग 15% तक का योगदान दिया है।"[3] राजस्थान टूरिज़्म डिपार्टमेंट के अनुसार पर्यटन क्षेत्र राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 15% का योगदान देता है और लाखों लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

"राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का योगदान बहुत बड़ा है। यह उद्योग राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। पर्यटन ने यहाँ की विभिन्न सेवाओं और व्यवसायों को मजबूत किया है जिससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। राजस्थान में पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिससे न केवल पर्यटन क्षेत्र बल्कि अन्य क्षेत्रों जैसे होटल उद्योग, परिवहन, खुदरा, और हस्तशिल्प उद्योग को भी लाभ हुआ है।"[4]

राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं और नीतियां लागू की गई हैं। "2000-01 में पर्यटक सहायता बल की शुरुआत की गई जिसमें भूतपूर्व सैनिकों को पर्यटकों की सुरक्षा और सहायता के लिए तैनात किया गया। पेइंग गेस्ट योजना 1991 में शुरू की गई जो पर्यटकों को आवासीय सुविधाएं प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त राजीव गांधी पर्यटन मिशन (2001), होटल नीति (2006), इको टूरिज्म पॉलिसी (2010) और नई पर्यटन नीति (2020) भी लागू की गयी है। राजस्थान इको टूरिज्म पॉलिसी बनाने वाला देश का पहला राज्य है। 2001 में राजस्थान में 8.4 मिलियन पर्यटक थे जो 2019 में बढ़कर 52.2 मिलियन हो गए। वर्ष 2019 में राजस्थान में 5.19 करोड़ पर्यटकों ने भ्रमण किया जिनमें से 16.1 लाख विदेशी पर्यटक थे।"[5]

राजस्थान पर्यटन नीति, 2020 का उद्देश्य राज्य को अग्रणी पर्यटन ब्रांड के रूप में स्थापित करना है। इसके तहत पर्यटन स्थलों की कनेक्टिविटी में सुधार, आवासीय बुनियादी ढांचे का विस्तार, महिला पर्यटकों के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करना, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना और निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करना शामिल है। "राजस्थान में ऐतिहासिक स्मारक, मरुस्थलीय पर्यटन, एडवेंचर टूरिज्म, बॉर्डर टूरिज्म, ग्रामीण पर्यटन, एजुकेशन टूरिज्म, वेलनेस टूरिज्म, धार्मिक पर्यटन, वेडिंग टूरिज्म और क्राफ्ट टूरिज्म जैसे विविध आयाम हैं। राजस्थान सरकार ने हाल ही में 500 करोड़ रुपए का पर्यटन विकास कोष बनाने की घोषणा की है साथ ही शेखावाटी और गौडवाड पर्यटन सर्किट को विकसित करने की योजना बनाई है।"[6]

तालिका सं. 1 राजस्थान में घरेलू और विदेशी पर्यटकों की संख्या (2015-2023)

क्र. सं.	**वर्ष**	**घरेलू पर्यटक**	**विदेशी पर्यटक**	**कुल पर्यटक**
1.	2015	35187573	1543711	36662884
2.	2016	41495115	1537299	43008414
3.	2017	41956173	1506993	43563166
4.	2018	50253643	1753448	51989991
5.	2019	52262431	1605650	53825991

6.	2020	15112793	446457	15563650
7.	2021	15201431	3796455	51272995
8.	2022	53110041	1160222	10229871
9.	2023	59122439	1920144	16269591

स्रोत- पर्यटन वार्षिक रिपोर्ट 2022-2023, पर्यटन विभाग, राजस्थान

तालिका सं. 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि राजस्थान में 2010 से 2023 तक पर्यटन क्षेत्र में सतत वृद्धि देखी गई है। वर्ष 2010 में राज्य में कुल 2.68 करोड़ पर्यटक पहुंचे जिनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या लगभग 12.78 लाख थी। इसके पश्चात् 2013 और 2014 में पर्यटकों की संख्या में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई जो क्रमशः 3.17 करोड़ और 3.46 करोड़ तक पहुँच गई। हालाँकि 2020 में वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण पर्यटन में भारी गिरावट आई जिससे यह क्षेत्र प्रभावित हुआ। 2021 के बाद स्थिति में सुधार हुआ और वर्ष 2022 तथा 2023 में पर्यटकों की संख्या में फिर से उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई।

विशेष रूप से 2023 में कुल पर्यटकों की संख्या 1.62 करोड़ से अधिक रही जिसमें विदेशी पर्यटकों की भागीदारी भी पुनः बढ़ने लगी जो पर्यटन उद्योग के पुनर्जीवन का सकारात्मक संकेत है। यह वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि राजस्थान सरकार द्वारा पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विभिन्न योजनाएँ और प्रयास प्रभावी सिद्ध हुए है। इन आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए भविष्य में पर्यटन विकास के और भी प्रभावशाली कदम उठाए जा सकते हैं जिससे राज्य की आर्थिक समृद्धि को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

राजस्थान में पर्यटन के अनेक रूप विद्यमान हैं जो पर्यटकों को विभिन्न रुचियों के अनुसार अनुभव प्रदान करते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन में पारंपरिक नृत्य, संगीत, पोशाकें, मेलों और त्योहारों की झलक मिलती है। धार्मिक पर्यटन के अंतर्गत अजमेर शरीफ, खाटू श्याम जी, मेहंदीपुर बालाजी और रामदेवरा जैसे स्थल प्रमुख हैं। प्राकृतिक पर्यटन के अंतर्गत माउंट आबू जैसे पर्वतीय स्थल, रणथंभौर और सरिस्का जैसे वन्य जीव अभ्यारण्य आते हैं। साहसिक पर्यटन में ऊँट सफारी, डेजर्ट बाइकिंग, हॉट एयर बैलून राइड आदि शामिल हैं। इसके अलावा थीम आधारित पर्यटन जैसे हेरिटेज होटल्स, ग्रामीण पर्यटन, वेलनेस टूरिज्म और रॉयल वेडिंग टूरिज्म ने भी हाल के वर्षों में तेज़ी से विकास किया है।

“वर्तमान में राजस्थान के प्रमुख पर्यटन केंद्रों जैसे जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, और जैसलमेर में विभिन्न आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं जो इन स्थानों को और भी आकर्षक बनाती हैं।”[7] “राज्य में पर्यटन के बढ़ते प्रभाव ने विभिन्न सामाजिक वर्गों के लिए आर्थिक अवसरों के द्वार खोले हैं। इससे महिलाओं, आदिवासी समुदायों, और अन्य पिछड़े वर्गों को भी रोजगार प्राप्त हुआ है। कई गांवों और छोटे कस्बों में पर्यटन के कारण नए व्यवसाय खुलने से स्थानीय लोगों की जीवनशैली में सुधार आया है।”[8]

तालिका सं. 2 : पर्यटन स्थलों के विकास एवं संरक्षण हेतु व्यय की गई राशि (2018-19 से 2023-24 तक)

वर्ष	बजट प्रावधान (लाख रू.)	संशोधित अनुमान (लाख रू.)	व्यय (लाख रू.)
2018-19	6150.46	2856.19	2168.36
2019-20	4805.39	1668.30	800.19
2020-21	4501.47	2137.26	1254.33
2021-22	18451.26	3207.29	1694.29
2022-23	6680.01	4606.18	2204.39
2023-24	4266.52	-	432.75

स्रोत- वार्षिक प्रगति रिपोर्ट 2022-2023, पर्यटन विभाग, राजस्थान

तालिका सं. 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि वर्ष 2018-19 से 2023-24 तक राजस्थान में पर्यटन स्थलों के संरक्षण और विकास के लिए निर्धारित बजट, संशोधित अनुमान तथा वास्तविक खर्च में सतत वृद्धि देखी गई है। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि राज्य सरकार ने पर्यटन क्षेत्र को विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानते हुए इसमें लगातार निवेश बढ़ाया है। प्रत्येक वर्ष बजट प्रावधानों और खर्च में हुई बढ़ोतरी यह संकेत देती है कि पर्यटन को न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम माना गया है बल्कि सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु भी इसे नीति स्तर पर प्राथमिकता दी गई है।

पर्यटन से होने वाली आय का एक बड़ा हिस्सा स्थानीय अर्थव्यवस्था में सर्कुलेट होता है जिससे छोटे व्यापारियों, कारीगरों और सेवा प्रदाताओं को लाभ मिलता है। विशेष रूप से होटल, रेस्तरां, ट्रांसपोर्ट और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार प्रत्येक आठ विदेशी पर्यटकों के आगमन पर एक व्यक्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होता है। राजस्थान में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिससे देश के विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूती मिलती है। पर्यटन से जुड़े उद्योगों जैसे हस्तशिल्प, कपड़ा और स्थानीय कला को बढ़ावा मिलता है जिससे स्थानीय उत्पादों की मांग बढ़ती है और कुटीर उद्योगों को नया जीवन मिलता है।

पर्यटन क्षेत्र के विस्तार ने जहाँ राज्य की आर्थिक प्रगति और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है वहीं इसके साथ कुछ सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। विशेष रूप से जयपुर, उदयपुर और जैसलमेर जैसे प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की अत्यधिक भीड़ के कारण स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा है जिससे जल, वायु और मृदा प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हुई है।

इसके अतिरिक्त पर्यटन के व्यावसायिक दृष्टिकोण ने स्थानीय संस्कृति और परंपराओं के स्वरूप को भी प्रभावित किया है। पारंपरिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ अब अधिकतर आर्थिक लाभ के उद्देश्य से प्रस्तुत की जाने लगी

हैं जिससे उनकी मौलिकता और सामाजिक मूल्य में कमी देखी जा रही है। राजस्थान में सतत पर्यटन विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियां एवं समस्याएं निम्न है-

सतत पर्यटन विकास की प्रमुख चुनौतियाँ

- **अवसंरचनात्मक कमियाँ**

राजस्थान के कई पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं जैसे सड़क, यातायात, स्वच्छ पानी और स्वच्छता की कमी है। कई ऐतिहासिक स्थलों तक पहुँचने के लिए उचित सड़क मार्ग नहीं हैं जिससे पर्यटकों को असुविधा होती है। इसके अलावा राज्य में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों की कमी है जिसके कारण विदेशी पर्यटकों को दिल्ली या मुंबई जैसे शहरों से होकर आना पड़ता है।

- **सुरक्षा और धोखाधड़ी की समस्याएँ**

पर्यटकों के साथ धोखाधड़ी, ऊँची कीमतों पर सामान बेचने और छोटी-मोटी चोरी की घटनाएँ बढ़ रही हैं। इससे पर्यटकों का विश्वास कम होता है और राज्य की छवि खराब होती है। सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और पर्यटक हेल्पलाइन जैसी सेवाओं को बेहतर बनाने की आवश्यकता है।

- **पर्यावरणीय और सांस्कृतिक प्रदूषण**

बढ़ते पर्यटन के कारण कई ऐतिहासिक स्थलों पर कचरे और प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। साथ ही स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का अति-व्यावसायीकरण हो रहा है जिससे उनकी मूल भावना खो रही है।

- **प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी**

पर्यटन से जुड़े कर्मचारियों विशेष रूप से गाइड्स और होटल स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी है। इसके कारण सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित होती है और पर्यटकों को अच्छा अनुभव नहीं मिल पाता।

- **विपणन और डिजिटल उपस्थिति की कमी**

राजस्थान के पर्यटन स्थलों को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने के लिए प्रभावी डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों की कमी है। कई छोटे पर्यटन स्थलों की ऑनलाइन उपस्थिति नगण्य है जिससे उनकी पहुँच सीमित हो जाती है।

सतत पर्यटन विकास हेतु समाधान और सुझाव

राज्य सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई नवीन पहल की हैं जैसे फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति, कलाकार कल्याण कोष और सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम। राजस्थान उत्सव और विश्व पर्यटन दिवस जैसे आयोजनों के माध्यम से राज्य की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित किया जाता है। इन प्रयासों के कारण राजस्थान न

केवल भारत बल्कि विश्वभर में पर्यटन के क्षेत्र में एक प्रमुख स्थान बना चुका है। पर्यटन क्षेत्र से उत्पन्न सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान सतत पर्यटन नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन से संभव है।

'इको टूरिज्म' और 'कम्युनिटी आधारित पर्यटन' जैसे मॉडल पर्यावरण संरक्षण के साथसाथ स्थानीय - संस्कृति को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पर्यटकों को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करना, स्थानीय समुदायों को पर्यटन से प्रत्यक्ष लाभ पहुंचाना और पारंपरिक सांस्कृतिक विधाओं को उनके मौलिक स्वरूप में प्रस्तुत करना ऐसे उपाय हैं जिनसे राजस्थान के पर्यटन विकास को संतुलित और टिकाऊ बनाया जा सकता है। इनमें प्रमुख सुझाव निम्नवत है-

1. **धरोहर संरक्षण और संवर्धन हेतु वित्तीय नवाचार**

- पर्यटन विकास बॉन्ड (Tourism Development Bonds)

राजस्थान में पर्यटन विकास बॉन्ड एक नवीन और प्रभावी वित्तीय साधन के रूप में विकसित किए जा सकते हैं जो औद्योगिक घरानों को राज्य की सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण व पुनरुद्धार में साझेदारी का अवसर प्रदान करेंगे। "इन बांडों में निवेश करके, उद्योगपति राज्य की उपेक्षित धरोहरों के संरक्षण और पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इन बांडों से प्राप्त धनराशि का उपयोग स्मारकों के पुनरुद्धार, रखरखाव और आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप उन्नयन में किया जाएगा। इन बांडों की विशिष्टता उनकी "विन-विन" स्थिति में है। जैसे-जैसे पुनर्जीवित स्मारक अधिक पर्यटकों को आकर्षित करेंगे वैसे-वैसे बांडों का मूल्य भी बढ़ेगा, जिससे निवेशकों को आकर्षक वित्तीय लाभ प्राप्त होंगे।"[9]

इन बोंडों में निवेश के माध्यम से प्राप्त धनराशि का उपयोग प्राचीन स्मारकों, हवेलियों, बावड़ियों, मंदिरों एवं ऐतिहासिक स्थलों के पुनर्निर्माण, रखरखाव और आधुनिक सुविधाओं के विकास में किया जाएगा। यह योजना निवेशकों के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगी क्योंकि जैसे-जैसे पुनर्जीवित धरोहर स्थल अधिक पर्यटकों को आकर्षित करेंगे वैसे-वैसे इन बांडों का आर्थिक मूल्य भी बढ़ेगा। इससे निवेशकों को वित्तीय लाभ तो मिलेगा ही, साथ ही वे राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को संजोने में महत्वपूर्ण योगदान देकर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और उत्तरदायित्व की भावना को भी मजबूत कर सकेंगे।

- अडॉप्ट ए मॉन्युमेंट योजना

इसके माध्यम से कंपनियों को स्मारकों व ऐतिहासिक स्थलों को CSR गतिविधियों के अंतर्गत गोद लेने हेतु प्रेरित किया जाए। "इस पहल के तहत जो कंपनियां और उद्योगपति राइजिंग राजस्थान समिट में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हैं उन्हें अपनी CSR योजनाओं के तहत विरासत स्थलों को गोद लेने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। प्रत्येक गोद लिए गए स्थल चाहे वह कोई प्राचीन बावड़ी हो, जीर्ण-शीर्ण हवेली हो या भूली हुई छत्री औद्योगिक घराने को एक निश्चित अवधि के लिए सौंपा जाएगा। इस अवधि में संबंधित कंपनी उस स्मारक के

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

पुनरुद्धार, रखरखाव और संरक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। बदले में उन्हें अपने ब्रांड को सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और सौंदर्यपूर्ण ढंग से प्रदर्शित करने का अवसर मिलेगा।”[10]

2. ग्रामीण पर्यटन और संस्कृति संवर्धन

राजस्थान की लगभग 70% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जहां की संस्कृति, जीवनशैली और परंपराएँ पर्यटकों के लिए अत्यंत आकर्षक हो सकती हैं। इसके तहत गाँवों में होम-स्टे की सुविधा विकसित कर स्थानीय खान-पान, हस्तशिल्प, लोक-कलाओं और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई जा सकती है। साथ ही ग्राम स्तरीय पर्यटन समितियों का गठन कर पर्यटन प्रबंधन में स्थानीय लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए जिससे आत्मनिर्भर ग्रामीण विकास की अवधारणा को भी साकार किया जा सके। केरल और उत्तराखंड में इस मॉडल की सफलता के बाद राजस्थान में भी ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने की व्यापक संभावनाएँ हैं।

3. इको टूरिज्म नीति

राजस्थान में पर्यटन का मुख्य उद्देश्य पर्यटन विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को सुनिश्चित करना है। राज्य के रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, सवाई माधोपुर, कुम्भलगढ़ किला जैसे प्राकृतिक स्थलों को इको टूरिज्म के अंतर्गत विकसित किया गया है जहाँ पर्यटकों को प्राकृतिक सौंदर्य और जैव विविधता का अनुभव कराने के साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने पर विशेष जोर दिया जाता है। इस नीति के तहत राज्य सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि पर्यटकों की संख्या सीमित रखी जाए ताकि प्राकृतिक संसाधनों पर अनावश्यक दबाव न पड़े। वन्यजीव अभयारण्यों और राष्ट्रीय उद्यानों में प्रवेश को नियंत्रित कर संरक्षण की दिशा में प्रयास किए गए हैं।

स्थानीय समुदायों को इको टूरिज्म से जोड़कर रोजगार, प्रशिक्षण और आत्मनिर्भरता के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त बनाया जा रहा है। इस नीति के माध्यम से पर्यटन विकास और पर्यावरणीय संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है। राजस्थान में हर साल 2 करोड़ से अधिक पर्यटक आते हैं जिससे अपशिष्ट और प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। Plastic Free Tourism, Renewable Energy Hotels और Eco-friendly Infrastructure जैसे प्रावधानों को लागू कर पर्यावरण संरक्षण संभव है।

4. जल संरक्षण आधारित पर्यटन

राजस्थान के ऐतिहासिक जल स्रोत 1500 से अधिक बावड़ियां और झीलें अब उपेक्षा का शिकार हैं। इनका संरक्षण जल-संवेदनशील पर्यटन को बढ़ावा देगा। साथ ही जल संरक्षण को पर्यटन विकास से जोड़कर पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त की जा सकती है।

5. . स्मार्ट पर्यटन अवसंरचना

राजस्थान में 2023 तक प्रमुख पर्यटन स्थलों पर डिजिटल सुविधा नहीं है। *QR Code Guide*, *Virtual Tour* और *Smart Signage* जैसी आधुनिक तकनीकों के माध्यम से पर्यटन अनुभव को उच्च स्तर तक ले जाया जा सकता है। इससे पर्यटक अधिक जागरूक व आकर्षित होंगे।

6. रोजगार सृजन एवं कौशल विकास

राजस्थान में पर्यटन से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 17 लाख लोगों को रोजगार मिलता है। अगर पर्यटन कौशल केंद्र स्थापित किए जाएं तो गाइड, होटल सेवा, भाषा अनुवाद, हैंडीक्राफ्ट जैसे क्षेत्रों में स्थानीय युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिल सकते हैं।

7. बहु-स्तरीय निगरानी और विशेषज्ञ समिति

पर्यटन विकास योजनाओं की गुणवत्ता और पारदर्शिता बनाए रखने हेतु सेवानिवृत्त अधिकारियों, विरासत विशेषज्ञों और पर्यटन उद्यमियों की संयुक्त समिति बनाई जानी चाहिए। इससे परियोजनाओं की समय-सीमा और गुणवत्ता की गारंटी सुनिश्चित की जा सकेगी।

8. चिकित्सा और यात्रा पर्यटन

“राजस्थान में स्वास्थ्य और चिकित्सा पर्यटन की बहुत संभावनाएँ हैं। राज्य में कई ऐतिहासिक स्थल और प्राकृतिक उपचार केंद्र है, जो चिकित्सा पर्यटन के रूप में विकसित किए जा सकते हैं। राजस्थान में आयुर्वेद, योग, और प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार प्रसार कर इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर उत्पन्न किए जा सकते हैं।”[11]

9. एकीकृत पर्यटन विकास मॉडल

राजस्थान के पर्यटन स्थलों को थीम आधारित सर्किट में विकसित किया जाए जैसे- हेरिटेज सर्किट (जयपुर-उदयपुर), डेजर्ट सर्किट (जैसलमेर-बाड़मेर), ईको सर्किट (माउंट आबू), स्पिरिचुअल सर्किट (अजमेर-पुष्कर)। इससे पर्यटन अनुभव बहु-आयामी और योजनाबद्ध होगा।

10. वैश्विक प्रचार-प्रसार और ब्रांडिंग

राजस्थान सरकार "Incredible Rajasthan" या "Royal Rajasthan" जैसे अभियान डिजिटल मीडिया, फिल्म शूटिंग और सोशल मीडिया प्रभावकों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर चला सकती है। इससे विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी और विदेशी मुद्रा अर्जन में वृद्धि होगी।

उपर्युक्त सुझावों के आधार पर राज्य में पर्यटन विकास की योजनाओं को नवाचार, वित्तीय प्रबंधन और स्थानीय सहभागिता के साथ कार्यान्वित किया जाए तो यह न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक पुनर्जागरण का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। पर्यटन विकास बॉन्ड, अडॉप्ट ए मॉन्युमेंट योजना, होम-स्टे मॉडल, जल संरक्षण आधारित पर्यटन, स्मार्ट अवसंरचना, ग्रीन पॉलिसी, रोजगार सृजन, कौशल विकास तथा बहु-स्तरीय निगरानी व्यवस्था जैसे उपाय राजस्थान में सतत पर्यटन विकास की आधारशिला रख सकते हैं।

एकीकृत पर्यटन विकास मॉडल एवं वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार के माध्यम से राजस्थान को एक विशिष्ट और आकर्षक पर्यटन गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। पर्यटन विकास की योजनाओं में पारदर्शिता, गुणवत्ता, स्थानीय भागीदारी एवं पर्यावरणीय संरक्षण को महत्व दिये जाने से राजस्थान आने वाले समय में वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर अपनी सशक्त पहचान बना सकता है। इससे राज्य की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण होगा,

स्थानीय लोगों के लिए रोजगार व आय के नए स्रोत सृजित होंगे और राज्य की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होगी।

इस प्रकार राजस्थान में पर्यटन ने जहां सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और राज्य की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है वहीं इससे जुड़ी सामाजिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए सतत विकास की नीतियों और व्यवहारिक कदमों की आवश्यकता है ताकि राज्य की सांस्कृतिक विविधता और पर्यावरणीय संसाधनों का दीर्घकालिक संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. मीना, के. सी. : *राजस्थान में पर्यटन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव*, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (UEMMASSS), 4(0111), 151-154. ISSN: 2581-9925, 2022
2. सुना. महेन्द्र कुमार, और सेनी, पी. ए. : *राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की भूमिका,* ALIRA वॉल्यूम II. इश्यू 11, 50. ISSN: 2455-5967, 2022
3. इंडिया टूरिज्म स्टेटिस्टिक्स (2024). पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
4. कुमार पी. : *राजस्थान में पर्यटन उद्योग एवं आर्थिक विकास में योगदान*, IRJMSH, 9(1), 2277-9809 (Online), 2348-9359, 2018
5. मनीषा मीना ; डॉ. कपिल मीना : *राजस्थान के आर्थिक विकास पर पर्यटन का प्रभाव*, IJIRCT, Volume 11, Issue 2. 2025, पृ. 2
6. राजस्थान पर्यटन नीति, 2020, भारत सरकार
7. कुमारी सुमन ; खान साबिहा : *राजस्थान में सांस्कृतिक पर्यटन क्षमता का आकलन*, International Journal of Creative Research Thoughts (UCRT), 11(7), 2320-2882. ISSN: 2320-2882, 2023
8. भास्कर, प्रियंका : *राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन का विकासः ग्रामीण राजस्थान में पर्यटन संस्कृति को प्रमोट करने वाले कारकों का अध्ययन*, पैसिफिक बिजनेस रिव्यू (इंटरनेशनल), 15(10), ISSN 0974-438X, 2023
9. यशवर्धन राणावत 'जैवाणा' : *राइजिंग राजस्थान :भारत की अमर धरोहर के लिए एक नई सुबह ; क्रांतिकारी सुझाव,* पृ. 5-6
10. वही, पृ. 5-6

11. मनीषा मीना ; डॉ. कपिल मीना : *राजस्थान के आर्थिक विकास पर पर्यटन का प्रभाव*, IJIRCT, Volume 11, Issue 2. 2025, पृ. 8

12. पर्यटन वार्षिक रिपोर्ट 2022-2023, पर्यटन विभाग, राजस्थान